

श्रीहित हरिवंश महाप्रभु जी कृत  
श्री हित स्फुट वाणी



॥ श्री हित राधा कलशो जगति ॥

॥ श्री हित हरिवंश चंडी जगति ॥

## सवैया -

द्वादश चन्द्र, कृतस्थल मंगल, बुद्ध विरुद्ध, सुर-गुरु बंक ।  
यद्दी दशम्म-भवन्न भृगू-सुत , मंद सु केतु जनम्म के अंक ॥  
अष्टम राहु चतुर्थ दिवामणि, तो हरिवंश करत नहिं शंक ।  
जो पै कृष्ण-चरण मन अर्पित, तो करि हैं कहा नवग्रह रंक ॥१॥

भानु दशम्म, जनम्म निशापति , मंगल-बुद्ध शिवस्थल लीके ।  
जो गुरु होंहिं धरम्म-भवन्न के , तो भृगु-नन्द सु मन्द नवी के ॥  
तोसरो केतु समेत विधु-ग्रस , तो हरिवंश मन क्रम फीके ।  
गोविन्द छाँड़ि भ्रमंत दशौं दिशि , तो करि हैं कहा नवग्रह नीके ॥२॥

## छप्पय -

ना जानौ छिन अन्त कवन बुधि घटहि प्रकाशित ।  
छुटि चेतन जु अचेत तेउ मुनि भये विष वासित ॥  
पाराशर सुर इन्द्र कलप कामिनि मन फंघा ।  
परिव देह दुख दुन्द कौन क्रम काल निकंघा ॥  
इहिं डरहिं डरपि हरिवंश हित, जिनव भ्रमहि गुण सलिल पर ।  
जिहिं नामनि मंगल लोक तिहुं, सु हरि-पद भजि न विलम्ब कर ॥३॥

श्री हित निशिध जोष्यामी जी महाराज  
श्री हित राधाकलश लाल गविर , बुंदावन  
[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)

॥ श्रीहित राधावल्लभो नमः ॥

॥ श्रीहित हरिवंश चंडो नमः ॥

## सवैया -

तू बालक नहिं भरयो सयानप , काहें कृष्ण भजत नहिं नीके ।  
अतिव सु मिष्ट तजिव सुरभिन-पय , मन बंधत तन्दुल जल फीके ॥  
जै श्रीहित हरिवंश नरक गति दुरभर , यम द्वारें कटियत नक छीके ।  
भव अज कठिन मुनीजन दुर्लभ , पावत क्योंव मनुज तन भीके ॥४॥

## कुण्डलियाँ -

चकई ! प्रान जु घट रहें , पिय-विघुरंत निकज्ज ।  
सर-अन्तर अरु काल निशि , तरफि तेज घन गज्ज ॥  
तरफि तेज घन गज्ज , लज्ज तुहि वदन न आवै ।  
जल-विह्वन करि नैन , भोर किहिं भाय दिखावै ॥  
जै श्रीहित हरिवंश विचारि , वाद अस कौन जु बकई ।  
सारस यह सन्देह, प्रान घट रहें जु चकई ॥५॥

सारस ! सर विघुरन्त को , जो पल सहै शरीर ।  
अगिन अनंग जु तिय भस्त्रै , तौ जानै पर पीर ॥  
तौ जानै पर पीर , धीर धरि सकहि बज तन ।  
मरत सारसहिं फूटि , पुनि न परचौ जु लहत मन ॥  
जै श्रीहित हरिवंश विचारि , प्रेम विरहा बिनु वा रस ।  
निकट कन्त नित रहत , मरम कह जानें सारस ॥६॥

श्रीहित मिश्र जी गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल गिरि , गुरुवन  
[www.shriradhavallabhiala.com](http://www.shriradhavallabhiala.com)



॥ श्रीहित राधावल्लभो नमः ॥

॥ श्रीहित हरिवंश चंडो नमः ॥

### छप्पय -

तैं भ्राजन कृत जटित विमल चन्दन कृत इन्धन ।

अमृत पूरि तिहिं मध्य करत सरषप खल रिन्धन ॥

अदभुत धर पर करत कष्ट कंचन हल वाहत ।

वारि करत पावार मन्द वोवन विष चाहत ॥

जे श्रीहित हरिवंश विचारिकैं , मनुज देह गुरु चरन गहि ।

सकहि तो सब परपंच तजि , कृष्ण-कृष्ण गोविन्द कहि ॥७॥

### सवैया -

तातैं भैया ! मेरी सौंह कृष्ण गुण संचु ।

कुत्सित बाद विकारहिं पर धन , सुनि सिख मंद पर तिय वंचु ।

मणिगन-पुंज ब्रजपति छाँड़त , हित हरिवंश कर गहि कंचु ॥

पाये जानि जगत में सब जन , कपटी कुटिल कलियुग-टंचु ।

इहिं परलोक सकल सुख पावत , मेरी सौंह कृष्ण गुण संचु ॥८॥

### अरिल्ल -

मानुष कौ तन पाय, भ्रजौ ब्रजनाथ कौ ।

दवी लैं कैं मृढ़ , जरावत हाथ कौ ॥

जे श्रीहित हरिवंश प्रपंच, विषय रस मोह के ।

बिनु कंचन क्यों चलैं, पचीसा लोह के ॥९॥

श्रीहित निशिष सोन्वामी श्री महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल गिरि , गुरुवन

[www.shriradhavallabhai.com](http://www.shriradhavallabhai.com)

॥ श्रीहित राधावल्लभो नमः ॥

॥ श्रीहित हरिवंश चंडो नमः ॥

## पद-राग-विलावल -

तू रति रंग भरी देखियत है शी राधे , तैं रहसि रमी मोहन सौव रैन ।  
गति अति शिथिल प्रगट पलटे पट , गौर अंग पर राजत ऐन ॥  
जलज कपोल ललित लटकति लट , भृकुटि कुटिल ज्यों धनुष धृत में ।  
सुन्दरि रहिव कहिव कंचुकि कत , कनक-कलश कुच विच नख दें ॥  
अधर विम्ब दलमलित आलस जुत , अरु आनन्द सूचत सखि नैन ।  
जै श्रीहित हरिवंश दुरत नहिं नागरि , नागर-मधुप मथत सुख सैन ॥१०॥

आनंद आजु नन्द के द्वार ।

दास अनन्य भजन रस कारन , प्रगटे लाल मनोहर ग्वार ॥  
चन्दन सकल धेनु तन मडित , कुसुम-दास-रंजित आगार ।  
पूरन कुम्भ बने तोरन पर , बीच रुचिर पीपर की डार ॥  
जुवति-जूथ मिलि गोप विराजत , बाजत पणव-मृदंग सुतार ।  
जै श्रीहित हरिवंश अजिर वर वीथिनु , दधि-मधि-दुग्ध-हरद के स्वार ॥११॥

श्रीहित मिश्र मोल्वासी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल गिरि , भृगुवन  
[www.shriradhavallabhia.com](http://www.shriradhavallabhia.com)

॥ श्रीहित राधावल्लभो नमः ॥  
॥ श्रीहित हरिवंश चंडो नमः ॥

राग-धनाक्षी -

मोहन लाल के रंग रौंकी ।

मेरे ख्याल परे जिन कोऊ , बात दशों दिशि माँची ॥

कंत अनन्त करी जो कोऊ , बात कहों सुनि साँची ।

यह जिय जाहु भलें सिर ऊपर , हो व प्रगट है नाची ॥

जाग्रत-सैन रहत उर ऊपर , मणि कंचन ज्यों पाची ।

जे श्रीहित हरिवंश डरों काके डर , हों नाहिन मति काची ॥१२॥

मैं जु मोहन सुन्यो वेंनु गोपाल को ।

व्योम मुनि यान सुर-नारि विथकित भई ,

कहत नाहिं बनत कछु भेद यति ताल को ॥

श्रवन कुण्डल घुरित रुरत कुन्तल ललित ,

रुचिर कस्तूरि चन्दन तिलक भाल को ।

चन्द गति मन्द भई निरखि छवि काम गई ,

देखि हरिवंश हित भेष नंदलाल को ॥१३॥

श्रीहित निशिष सोन्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल गविर , बुंदावन  
[www.shriradhavallabhiala.com](http://www.shriradhavallabhiala.com)



॥ श्रीहित राधा कलशो बध्ति ॥

॥ श्रीहित हरिवंश चंडो बध्ति ॥

आजु तू ग्वाल गोपाल सौ खेलि री ।  
छाँड़ि अति मान, वन चपल चलि भामिनी ,  
तरु तमाल सौ अरुझि कनक की बेलि री ॥  
सुभट सुन्दर ललन, ताप पर बल दमन ,  
तू व ललना रसिक काम की केलि री ।  
वैनु कानन कुनित, श्रवन सुन्दरि सुनत ,  
मुक्ति सम सकल सुख पाय पग पैलि री ॥  
विरह-व्याकुल नाथ, गान गुन जुवति तव ,  
निरखि मुख, काम कौ कदन अवहेलि री ।  
सुनत हरिवंश हित, मिलत राधा रमन ,  
कंठ भुज मेलि, सुख-सिन्धु में झेलि री ॥१४॥

वृषभानुनन्दिनी राजति हैं ।

सुरत-रंग-रस भरी भामिनी , सकल नारि सिर गाजति हैं ॥  
इत उत चलति परत दोऊ पग , मंद गयंद गति लाजति हैं ।  
अधर निरंग, रंग गंडनि पर , कटक काम कौ साजति हैं ॥  
उर पर लटक रही लट कारी , कटिव किंकिनी बाजत हैं ।  
जे श्रीहित हरिवंश पलटि प्रीतम पट , जुवति जुगति सब छाजति हैं ॥१५॥

श्रीहित निशिष जोष्यामी जी महाराज  
श्रीहित राधनल्लभ लाल गविर , वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)

॥ श्रीहित राधावल्लभो नमः ॥

॥ श्रीहित हरिवंश चंडी नमः ॥

चलो वृषभानु गोप के द्वार ।

जनम लियो मोहन हित श्यामा , आनंद-निधि सुकुमार ॥

गावत जुवति मुदित मिलि मंगल , उच्च मधुर धुनि धार ।

विविध कुसुम कोमल किशलय-दल , शोभित वन्दनवार ॥

विदित वेद-विधि विहित विप्रवर , करि स्वस्तिनु उच्चार ।

मृदुल मृदंग- मुरज- भेरी-डफ , दिवि दुन्दुभि स्वकार ॥

मागध सूत बंदी चारन जस , कहत पुकार-पुकार ।

हाटक-हीर-चीर-पाटम्बर , देत सम्हार-सम्हार ॥

चंदन सकल धेनु-तन मंडित , चले जु ग्वाल सिंगार ।

जे श्रीहित हरिवंश दुग्ध-दधि छिरकत , मध्य हरिद्रागार ॥१६॥

राग-गौरी -

तेरोई ध्यान राधिका प्यारी , गोवर्द्धनधर लालहिं ।

कनक लता सी क्यों न विराजति , अरुझी श्याम तमालहीं ॥

गौरी गान सु तान-ताल गहि , रिझवति क्यों न गुपालहीं ॥

यह जीवन कंचन-तन ग्वालिन , सफल होत इहिं कालहिं ॥

मेरें कहे विलम्ब न करि सखि , भूरि भाग अति भालहीं ॥

जे श्रीहित हरिवंश उचित हों चाहति , श्याम कंठ की मालहिं ॥१७॥

श्रीहित निशिध जोष्यामी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल गविर , गुंरावन

[www.shriradhavallabhai.com](http://www.shriradhavallabhai.com)



॥ श्रीहित राधावल्लभो नमः ॥

॥ श्रीहित हरिवंश चंडो नमः ॥

आरती मदन गोपाल की कीजियें ।

देव - ऋषि - व्यास - शुकदास सब कहत निजु ,

क्यों न विनु कष्ट रस-सिन्धु कौ पीजियें ॥

अगर करि धूप कुमकुम मलय रंजित नव ,

वर्तिका घृत सौं पूरि राखौ ॥

कुसुम कृत माल नंदलाल के भाल पर ,

तिलक करि प्रगट जस क्यों न भाखौ ॥

भोग प्रभु जोग भरि थार धरि कृष्ण पै ,

मुदित भुज-दण्ड वर चौर ढारो ॥

आचमन पान हित, मिलत कर्पूर-जल ,

सुभग मुख वास, कुल-ताप जारो ॥

शंख दुन्दुभि पणव घट कल वैनु रव ,

झल्लरी सहित स्वर सप्त नाँचो ॥

मनुज-तन पाइ इहिं दाइ ब्रजराज भजि ,

सुखद हरिवंश प्रभु क्यों न जाँचो ॥१८॥

आरति कीजे श्याम सुन्दर की । नन्द के नन्दन राधिका वर की ॥

भक्ति करि दीप प्रेम करि बाती । साधु-संगति करि अनुदिन राती ॥

आरति जुवति-जूथ मन भावे । श्याम लीला श्रीहरिवंश हित गावे ॥१९॥

श्रीहित निशिष जोष्यामी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल गिरि, गुंरावन

[www.shriradhavallabhial.com](http://www.shriradhavallabhial.com)

॥ श्रीहित राधावल्लभो नमः ॥  
॥ श्रीहित हरिवंश चंडो नमः ॥

रहो कोऊ काहू मनहिं दियें ।  
मेरें प्राणनाथ श्रीश्यामा, शपथ करों तृण छियें ॥  
जे अवतार कदम्ब भजत हैं, धरि दृढ़ व्रत जु हियें ।  
तेऊ उमगि तजत मर्यादा, वन बिहार रस पियें ॥  
खोये रतन फिरत जे घर-घर, कौन काज अस जियें ।  
जे श्रीहित हरिवंश अनत सचु नाहीं, बिनु या रजहिं लियें ॥२०॥

हरि रसना राधा-राधा रट ।  
अति अधीन आतुर यदपि पिय , कहियत हैं नागर नट ॥  
संभ्रम द्रुम, परिरंभन कुंजन , हूँदत कालिन्दी-तट ।  
विलपत, हँसत, विषीदत, स्वेदित , सतु सींचत अँसुवनि वंशीवट ॥  
अंगराग परिधान वसन , लागत ताते जु पीतपट ।  
जे श्रीहित हरिवंश प्रसशित श्यामा , दै प्यारी कंचन-घट ॥२१॥

श्रीहित निशिष जोष्यामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल गिरि, कुंजवन  
[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)

॥ श्री हित राधा कल्याणो नमः ॥

॥ श्री हित हरिवंश चंडी नमः ॥

## राग-कल्याण -

लाल की रूप माधुरी नैननि निरखि नैंक सखी ।  
मनसिज-मनहरन हास,साँवरो सुकुमार रासि,  
नख-सिख अँग-अंगनि उमगि,सौभग-सीव नखी ॥  
रैगमैंगी सिर सुरैग पाग, लटकि रही वाम भाग ,  
चंपकली कुटिल अलक बीच-बीच रखी ।  
आयत दग अरुन लोल,कुंडल मंडित कपोल ,  
अधर दसन दीपति की छवि,क्यों हूँ न जात लखी ॥  
अभयद भुज-दंड मूल, पीन अंश सानुकूल,  
कनक-निकष लसि दुकूल, दामिनी धरणी ।  
उर पर मंदार-हार, मुक्ता-लर वर सुदार,  
मत्त दुरद-गति, तियन की देह-दषा करणी ॥  
मुकुलित वय नव किशोर, वचन-रचन चित के चोर,  
मधुरितु पिक-शाव नूत-मंजूरी चखी ।  
जे श्री नटवत हरिवंश गान, रागिनी कल्याण तान,  
सप्त स्वरन कल इते पर, मुरलिका वरखी ॥२॥

श्री हित निशिष जोषाजी जी महाराज  
श्री हित राधाकल्याण लाल गविर, गुंदावन  
[www.shriradhavallabhai.com](http://www.shriradhavallabhai.com)



॥ श्रीहित राधावल्लभजी जयन्ति ॥

॥ श्रीहित हरिवंश चंडी जयन्ति ॥

## राग-मलार -

दोउ जन भीजत अटके बातन ।

सघन कुंज के द्वारे ठाढ़े, अम्बर लपटे गातन ॥

ललिता ललित रूप-रस भीनी, बूँद बचावति पातन ।

जै श्रीहित हरिवंश परस्पर प्रीतम, मिलवत रति रस घातन ॥२३॥

## दोहा -

सबसों हित निष्काम मति, वृन्दावन विश्राम ।

श्रीराधावल्लभलाल कौ, हृदय ध्यान मुख नाम ॥

तनहिं राखि सतसंग में, मनहिं प्रेम रस भेव ।

सुख चाहत हरिवंश हित, कृष्ण-कल्पतरु सेव ॥

निकसि कुंज ठाढ़े भये, भुजा परस्पर अंश ।

श्रीराधावल्लभ-मुख-कमल, निरखि नैन हरिवंश ॥

रसना कटौ जु अन रटौ, निरखि अन फूटौ नैन ।

श्रवण फूटौ जो अन सुनों, बिनु राधा-जस बैन ॥२४॥

॥ इति श्रीहित स्फुटवाणी संपूर्ण ॥

श्रीहित निशिथ जोष्याजी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल गविर, वृन्दावन

[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)